

मातु कौशल्या श्री रंग दर पैँ बोलत है मधुरी बोली
मेरी लालण से भर दो झोली ॥

बूढ़े वयस की हो गई बाबा तेरी चरणनि चेरी
कुल उज्यारे का मुख नहीं देखा बारम्बार कहियो टेरी
कुंअर को कब देंऊं लोली—मेरी ॥

गुरुदेव वचन का दृढ़ भरोसा कुल वंश का सूरज आए
पुत्र जन्म की प्यासी जननी निश दिन देव मनाए
मैं सेवकि हूँ बिन मोली—मेरी ॥

प्राण नाथ के साथ यज्ञ में दीक्षा है मैं ने लीन्ही
तुव कृपा की भई भिखारिणि चोली आंसुओं से भीनी
क्यों न कृपा खिड़की खोली—मेरी ॥

सुनि जननी की विनय प्यारी ठाकुर बोली बाणी
दिव्य लाल तेरी गोद में अइहैं सुनु कौशल कल्याणी
उपमा जिसकी अण मोली—मेरी ॥

सुनि मृदु गिरा मगन हो मैया चरणनि शीश झुकाया
बार बार बलहारी कहि कहि जै जै सुर राया

गुण तेरा गावे गोली—मेरी ॥

सफल आशीश ईश की होई प्रघटे साकेत स्वामी

चेट की नौमी मध्य दिवस में आए अन्तरयामी

साथ में भाईयों की टोली—मेरी ॥

मैगसि मैया देत वाधाई जै जै दशरथ राणी

चिरु जीवे तेरो लालु लड़ैतो शील स्नेह सियाणी

खेलो हर्ष भरी होली—मेरी ॥